कृतज्ञता का अभाव

बाबा मुक्तानन्द द्वारा सुनाई गई कहानी

अपने भ्रमणकाल में साधना करते हुए मैं भारत के गाँवों में अक्सर एक कहानी सुनता था। यह कहानी है, एक उदार स्त्री और एक भिखारी की, जिसे गाँववाले मराठी भाषा में पद्यरूप में गाया करते थे।

एक समृद्ध परिवार की दयालु स्त्री के द्वार पर एक भिखारी आया करता था। वह दूध माँगता और वह स्त्री बड़ी खुशी से उसे दूध देती थी। ऐसा बारह वर्षों तक, हर दिन चलता रहा।

एक सुबह, जब भिखारी उस स्त्री के द्वार पर आया तब उस स्त्री ने उसे बताया कि उस दिन उसकी गाय ने अब तक दूध नहीं दिया है। किन्तु, उसके पास एक घड़ा भर छाछ है, और वह छाछ भिखारी को देने से उसे खुशी होगी।

भिखारी तुरन्त भड़क उठा और उस स्त्री पर चिल्लाने लगा। "कितनी कंजूस हो तुम! तुम्हारे पास इतनी धन-सम्पत्ती है। तुम्हारे पास तो भण्डार है। तुम्हारे घर में दूध की नदी बहती है। और तुम यह कहकर मुझे दूध देने से इंकार कर रही हो कि इसके बजाय तुम मुझे *छाछ* दोगी। सच तो यही है कि तुम मुझसे कह रही हो कि तुम मुझे दूध दोगी ही नहीं!"

भिखारी की इस प्रतिक्रिया को देखकर वह परोपकारी दात्री अचम्भित रह गई। उसने बारह वर्षों तक, हर एक दिन उस भिखारी को दूध दिया था, लेकिन बस इतने छोटे-से इंकार से वह भिखारी आगबबूला हो गया और बड़ी निर्दयता से उसने उस भली स्त्री को दोषी ठहराया।

कुछ देर बाद, वह भिखारी छाछ लिए बिना वहाँ से चला गया।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।